RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 76, अंक : 17 एक प्रति 2 : रुपये
कुल पृष्ठ : 8
रविवार 28 जुलाई, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-76, अंक : 17, 25-28 जुलाई 2019 तदनुसार 13 श्रावण, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

भगवान् की पूजा करता हूँ

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।

-ऋ० १।१।१

शब्दार्थ-मैं **पुरोहितम्** = सबसे पूर्व विद्यमान **यज्ञस्य** = संसार यज्ञ के **देवम्** = प्रकाशक **ऋत्विजम्** = ऋतुओं के सङ्गत करने वाले **होतारम्** = महादानी **रत्नधातमम्** = रत्ननिर्माता **अग्निम्** = अग्रणी प्रभु की **ईळे** = स्तुति करता हूँ।

व्याख्या-यह ऋग्वेद का पहला मन्त्र है, मानो भगवान् का सबसे पहला उपदेश है। मनुष्य से पूर्व प्रायः सारी सृष्टि रची जा चुकी है। मनुष्य अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाता है। विविध पदार्थ देखकर चकित और उद्भ्रान्त-सा हो जाता है। भगवान् ने उसे इन सब पदार्थों के नाम, गुण, धर्म बताने तथा उनसे उपयोग लेने के लिए वेद-ज्ञान का दान किया। सबसे पहले उसे श्लोषालङ्कार के द्वारा भगवान् ने अपना, जीव का तथा अग्नि का उपदेश किया है। जब यह जगत् न था, परमेश्वर तब भी था। जगत् से पूर्व वर्त्तमान होने के कारण भगवान् पुरोहित है। शरीर से पूर्व जीव विद्यमान होता है, अतः जीव भी पुरोहित है। संसार के सब पदार्थों से पहले अग्नि के सूर्यरूप में दर्शन होते हैं, अतः अग्नि 'पुरोहित' है। भगवान् इस संसार का रचयिता है, अतः वही इस संसार-यज्ञ का देव=द्योतयिता=प्रकाशक है। शरीर-यज्ञ का सञ्चालन जीव द्वारा होता है, अतः वह भी 'यज्ञ का देव' है। भौतिक यज्ञ-अग्निहोत्र से अश्वमेध-पर्यन्त, तथा शिल्प-कला-कौशलादि-सभी अग्नि से साध्य हैं, अतः अग्नि भी यज्ञ का प्रकाशक है। ऋतुओं और व्यवस्थाओं को संगत करने से भगवान् 'ऋत्विक्' हैं। यज्ञ-याग करने से सभी जीव भी ऋत्विक् हैं। ऋतुओं का होना सूर्यरूप अग्नि पर निर्भर है, अतः अग्नि ऋत्विक् है। भगवान् के बराबर किसी का दान नहीं, अतः भगवान् 'होता' है। जीव कर्मफलभोक्ता होने के कारण 'होता' है। होम का साधन होने से अग्नि 'होता' है। सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, पय, पावक, पवन आदिरूप रत्न=पदार्थों का निर्माता होने से भगवान् 'रत्नधातमम्' = रत्न का सर्वोत्तम निर्माता है। समस्त जगत् और जगत्स्थ सभी पदार्थों का उपयोक्ता तथा उपभोक्ता होने के कारण जीव 'रत्नधातम' है। भूगर्भ में पड़े पत्थर के कोयले को एक काल-विशेष में भूगर्भ का अग्नि रत्न बना देता है, अतः अग्नि 'रत्नधातम' है।

इस प्रकार तीनों अर्थों की सूचना होने पर भी मुख्य अर्थ परमेश्वर ही है। अग्नि आदि ये सब नाम मुख्यवृत्ति से परमेश्वर के हैं। जैसा कि यजुर्वेद [३२।१] में कहा है-'**तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः। तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः।।**' वही अग्नि, वही आदित्य, वही वायु तथा वही चन्द्रमा है। वही शुक्र, वही ब्रह्म, वही आपः और प्रजापति है, अर्थात् अग्नि, वायु, मित्र, वरुण आदि नाम मुख्यवृत्ति से भगवान् के नाम हैं। अग्नि शब्द का मूल अर्थ है-अग्रणी=आगे ले-जाने वाला, उन्नतिसाधक। भगवान् सबका उन्नतिसाधक है, अतः वह पूजनीय है। **असि होता न ईडयः** [ऋ० १।१२।३] तू महादानी ईडय=पूज्य है, अतः '**अग्निमीळे**' = मैं अग्रणी भगवान् की पूजा करता हूँ। वह '**अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीडयो नूतनैरुत**' [ऋ० १।१।२]-भगवान् पुरातन ऋषियों और विद्यार्थियों अर्थात् सभी बड़े-छोटों का पूजनीय है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म।।

-यजु० ४०.१७

भावार्थ-जो पुरुष धन को प्राप्त हो कर धन को शुभ कामों में लगाते हैं, पाप कर्मों में कभी नहीं लगाते वे पुरुष धन्यवाद के योग्य हैं। प्रायः सुवर्णादि धन से प्रमादी लोग, पाप करके मोक्ष मार्ग को प्राप्त नहीं हो सकते। इसलिए मन्त्र में कहा है कि सुवर्णादि धन से मुक्ति का द्वार ढका हुआ है, इसीलिए उपनिषद् में कहा है-"तत्त्वं पूषन् अपावृणु" हे सबके पालन पोषण कर्त्ता प्रभो! उस विघ्न को दूर कर ताकि मैं मुक्ति का पात्र बन सकूं। 'ओ३म्' यह परमात्मा का सब से उत्तम नाम है। इस नाम की उत्तमता वेद, उपनिषद्, दर्शन और गीता आदि स्मृतियों में वर्णन की गई है। इसमें वेदों को मानने वालों को कभी सन्देह नहीं हो सकता। उसको (खम्) आकाश की न्याईं व्यापक और सबसे बड़ा होने से ब्रह्म वेद ने कहा है।

अग्न या याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।।

-पू० १.१.१.१

भावार्थ-परम कृपालु परमात्मा, वेद द्वारा हम अधिकारियों को प्रार्थना करने का प्रकार बताते हैं। हे जगत्पितः! आप प्रकाशस्वरूप हैं, हमारे हृदय में ज्ञान का प्रकाश कीजिये। आप यज्ञ में विराजते हो, हमारे ज्ञानयज्ञरूप ध्यान में प्राप्त होओ। आपकी वेद और वेदद्रष्टा ऋषि लोग स्तुति करते हैं हमारी स्तुति को भी कृपा करके, श्रवण कर हम पर प्रसन्न होओ। आप ही सब को सब पदार्थ और सुखों के देने वाले हो।

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः।
देवेभिर्मानुषे जने।।

-पू० १.१.१.२

भावार्थ-आप जगत्पिता सब यज्ञों के ग्रहण करने वाले, यज्ञों के स्वामी हैं, अर्थात् श्रद्धा से किये यज्ञ होम, तप, ब्रह्मचर्य, वेदपठन, सत्यभाषण, ईश्वर भक्ति आदि उत्तम-उत्तम काम आपको प्यारे हैं। मनुष्य-जन्म में ही यह उत्तम कर्म किये जा सकते हैं और इन श्रेष्ठ कर्मों द्वारा, इस मनुष्य जन्म में आप परमात्मा का यथार्थ ज्ञान भी हो सकता है। पशु-पक्षी आदि अन्य योनियों में तो आहार, निद्रा, भय, राग, द्वेषादि ही वर्त्तमान हैं, न इन योनियों में यज्ञादि उत्तम काम बन सकते हैं और न आप का ज्ञान ही हो सकता है।

वेदों में ब्रह्म का स्वरूप निरूपण

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

कुछ समय पूर्व से विद्वानों में एक धारणा काम कर रही है कि वेद अपरा विद्या के ग्रन्थ हैं तथा वेदान्त एवं उपनिषदों में परा विद्या का वर्णन है। इस धारणा के बनने का कारण भी उपनिषदों में वर्णित कुछ विचार ही है। जैसे मुण्डकोपनिषद् में शौनक से कहा-द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्मयत् ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च।

दो विद्याएं जानने योग्य हैं। ब्रह्म विद्या को जानने वाले विद्वान् कहते है कि वे परा और अपरा विद्याएं कहलाती है। **तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरूक्तं छन्दो ज्योतिषामति। अथ परा यया तवक्षमधिगम्यते।** उनमें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द शास्त्र और ज्योतिष विद्या ये अपरा विद्याएं हैं। परा विद्या वह है जिससे अविनाशी ब्रह्म को जाना जाता है।

इसी प्रकार छान्दोग्य उपनिषद् के सातवें प्रपाठक के पहले खण्ड से लेकर छब्बीसवें खण्ड तक नारद-सनत्कुमार आख्यान है। इसके पहले खण्ड में सनत्कुमार नारद से प्रश्न करते है तो नारद कहता है-ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यं राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूत विद्या क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्यां सर्प देवजनविद्यामेतद् भगवोऽध्येमि।। छा. उप. 7.1.2.

हे भगवान्। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, इतिहास, पुराण वेदों के वेद अर्थात् उनके मुख्य विषय, शुश्रुषा विज्ञान, गणित, उत्पात विज्ञान, अर्थ शास्त्र, तर्क शास्त्र, नीति शास्त्र, निरूक्त, ईश्वर प्राप्ति विज्ञान, प्राणी शास्त्र, धनुर्विद्या, ज्योतिष, विषैले जन्तुओं की विद्या, नृत्य गीत, वाद्य शास्त्र इनको हे भगवान्। मैं अध्ययन कर चुका हूँ।

इस पर सनत्कुमार का कहना था, नाम वा ऋग्वेदों यजुर्वेदः सामवेद आथर्वेणाश्चतुर्थ इतिहास पुराणः पञ्चमो वेदानां वेदः पित्र्यो राशि दैंवो निधिर्वाको वाक्यमेकायनं देवविद्या ब्रह्मविद्या भूत विद्या क्षत्रविद्या नक्षत्र विद्या सर्प देवजनविद्या नामैवैतन्नामो पास्स्वेति।

ये सब विद्याएं तो नाम ही है उन्हें जानो। इन दो प्रकरणों के पढ़ने से यह विदित होता है कि वेद तो केवल मात्र अपरा विद्या है उनमें केवल वैज्ञानिक ज्ञान है। इसके अध्ययन से हम केवल यह जान पाते हैं कि संसार में किस तरह से रहना चाहिये। सृष्टि की खोज कर सकते हैं। ऊर्जा के विभिन्न रूपों का अध्ययन कर यह जान जाते हैं कि मानव जीवन में उनका उपयोग कैसे करना है। नई-नई खोजें कर सकते हैं, कई नये आविष्कार कर सकते हैं। नये-नये यंत्रों का आविष्कार कर मानव जीवन को कठोर श्रम से मुक्ति दिलाकर जीवन को सुविधा भोगी बना सकते हैं परन्तु ब्रह्म विद्या में अज्ञानी ही बने रहते हैं। वेदों के द्वारा केवल कर्म काण्ड ही सम्पन्न किये जा सकते हैं। इनके अध्ययन से मानसिक शांति प्राप्त होना संभव नहीं है। इसके विपरीत स्वामी दयानन्द का कहना है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। सब सत्य विद्याओं में ब्रह्म साक्षात्कार करने की विद्या भी सम्मिलित है।

अब इन दोनों कथनों की परीक्षा करके देखते हैं कि वास्तविक स्थिति क्या है। साथ ही यही जानने का प्रयत्न करते हैं कि वेदों में ब्रह्म के स्वरूप का निरूपण कैसे हुआ है ?

पहले उपनिषदों के कथन पर विचार करते हैं। उपनिषदों की संख्या वैसे तो 200 से अधिक है परन्तु ईश. केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डुक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वतर, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, उपनिषदों को ही प्रामाणिक माना जाता है। प्रस्थानत्रयी के सभी आचार्यों ने इन्हीं पर अपने भाष्यों की रचना की है। इनमें से ईशोपनिषद् तो लगभग पूर्वारूप से यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय ही है केवल एक श्लोक ही उसमें विशेष रूप से यजुर्वेद से बाहर का है। इस उपनिषद को ही सब उपनिषदों का मूलाधार माना जाता है। केनोपनिषद् तलवकार नामक सामवेदीय शाखा के जैमनीय ब्राह्मण (आरण्यक) के नवें अध्याय का एक भाग है। कठोपनिषद् यजुर्वेद की कठ शाखा के ब्राह्मण का भाग है जो प्रकाशित हो चुका है।

मुण्डकोपनिषद् अर्थवेदीय उपनिषद् है और अथर्ववेद की शौनक शाखा से सम्बन्धित है। माण्डूक्य उपनिषद् का सम्बन्ध भी अथर्ववेद से ही है। तैतिरीय उपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद से है। तैत्तिरीय आरण्यक के प्रपाठकों में से 7, 8 व 9वां प्रपाठक ही तैत्तिरीय उपनिषद् है। ऐतरेय उपनिषद् महिदास ऐतरेय ऋषि कृत है। इसके तीन अध्याय हैं जिनमें आत्म विद्या का वर्णन है। बृहदारण्यक उपनिषद भी इसी नाम के आरण्यक के 6 अध्याय मात्र है। श्वेताश्वतर तथा प्रश्नोपनिषद् भी वेदों के आधार पर ही ब्रह्म विद्या का वर्णन कर रहे हैं। उनमें कुछ मंत्र तो सीधे वेदों से ही लिये गये हैं। जैसे-एक ह देव प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जात स उ गर्भे अन्तः। यजु. 32.4.2वे, 216 वेदाहमेतं पुरूषं महान्तमादित्य वर्ण... यजु. 21.18. 2वे.3.8

त्वं स्त्री त्वं पुमानसि...श्वेता. 4.3

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया... श्वेत. 4.3 ऋ. 1.164.30

ऋचोअक्षरे परमे व्योमन... श्वेता. 4.8. ऋ. 1.164.39

सहस्त्रशीर्षा पुरूष... यजु. 31.1. श्वेता. 5.17 आदि

इसी प्रकार की स्थिति मुण्डक उपनिषद् की है-

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया... मुण्डल 3.1.1 ऋ. 1.164.30

ईशोपनिषद तो यजुर्वेद का 40वां अध्याय ही है। उसके 40वें अध्याय के 8वें मंत्र में ब्रह्म का स्वरूप निम्न मंत्र में कितने अच्छे प्रकार से वर्णित है।

स पर्य्यगाच्छु क्र मकाय-मव्रणमस्नाविरं शुद्धमापाप विद्धं। कविर्मनीषी परिभूः स्वयं भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छा-श्वत्तीभ्यः समाभ्य।। ईश 8 जो ब्रह्म सर्व शक्तिमान स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर से रहित, छिद्र रहित एवं अछेद्य, अविद्यादि दोषों से रहित, होने से सदा पवित्र और पाप युक्त पापी तथा पाप से प्रीति करने वाला कभी नहीं होता। सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सब जीवों के मनों की वृत्तियों को जानने वाला, अनादि स्वरूप जिसकी संयोग से उत्पत्ति वियोग से नाश, माता-पिता गर्भवास जन्म वृद्धि और मरण नहीं होवे। वह परमात्मा सनातन प्रजा के लिए यथार्थ भाव से वेद द्वारा सब पदार्थों को विशेष कर बनाता है। वही परमेश्वर तुम लोगों द्वारा उपासनीय है।

इसी प्रकार इसी उपनिषद् के चौथे मंत्र में भी ब्रह्म का वर्णन है।

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन् पूर्वमर्शत्। तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठतस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति।।

क्या ब्रह्म के इस स्वरूप का वर्णन दोनों जगह एक ही मंत्र से नहीं हुआ है।

अब हम वेद में ईश्वर का क्या स्वरूप है? इस पर विचार करते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद के आधार पर जो देखा उसे आर्य समाज के दूसरे नियम में इस प्रकार लिख दिया-'ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वव्यापक, सर्वान्तरयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है।'

यजुर्वेद अध्याय 40 के मंत्र में कहा गया है, 'ओ३म् खं ब्रह्म' अर्थात् ब्रह्म आकाश के समान सर्व व्यापक, सबसे गुण, कर्म, स्वभाव में अधिक और सबका रक्षक है। ऋग्वेद. 9.7.3 में ब्रह्म को सद्मभि सत्यो अध्वरः। हिंसा से दूर, सत्य स्वरूप और याज्ञिक उपासनों में उपास्य है माना है। ऋग्वेद 9.113.11. में वर्णन हुआ है, 'यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुदऽआसते। ब्रह्म में सम्पूर्ण आनन्द, सम्पूर्ण हर्ष, सम्पूर्ण प्रसन्नता और प्रकृष्ट प्रसन्न स्थित है।'

इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मती। ऋ. 9.64.10.

(इन्दुः) परमात्मा प्रकाश स्वरूप है। (पविष्टः) सबको पवित्र करने वाला है (चेतनः) चिद् रूप है (कवीनाम् प्रियः) विद्वानों का प्रिय है (मती) बुद्धि रूप है। ये तीनों मंत्र मिलकर उसे सच्चिदानन्द बनाते हैं।

अथर्ववेद काण्ड 3 सूक्त 10 के मंत्रों में अन्त में आता है तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। अर्थात् ब्रह्म सबसे बड़ा और उपास्य है। आदर करने योग्य है। परमात्मा सृष्टि का उत्पादन करता है इसलिए अथर्ववेद काण्ड 13 सूक्त के सभी मंत्रों में उसे रोहित नाम से पुकारा गया है।

विश्वतश्चक्षुरूत विश्वतो मुखो बाहुरूत विश्वत स्यात्। सं बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमीजनयनदेव एकः।। यजु. 12.19

(विश्वतचक्षुः) जिससे कोई वस्तु अदृश्य नहीं (उत्) और (विश्वतो मुखः) सर्वत्र मुख अर्थात्

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

23 जुलाई जन्मदिवस पर विशेष......

युवा पीढ़ी के प्रेरणास्रोत –चन्द्रशेखर आजाद

भरा नहीं जो भावों से जिसमें बहती रसधार नहीं,

वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

महान् कवि मैथिलीशरण गुप्त जी की ये पंक्तियां देश के प्रत्येक नागरिक के अन्दर स्वदेश के प्रति प्रेम, त्याग एवं बलिदान की भावना उत्पन्न करती हैं। वह राष्ट्र कभी उन्नति नहीं कर सकता जिस राष्ट्र के नागरिकों में त्याग एवं बलिदान की भावना नहीं होती। रामायण में प्रसंग आता है कि जब रावण को मारने के पश्चात मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के सामने लंका का राजा बनने का प्रस्ताव रखा जाता है तो वे कहते हैं कि–

अपि स्वणमयी लंका न च मे रोचते लक्ष्मण।

जननी स्वर्गभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी।।

अर्थात् जिस धरती पर हमने जन्म लिया है, उसका सुख स्वर्ग के सुख से भी बढ़कर है। हर नागरिक के अन्दर अपने देश के प्रति त्याग एवं बलिदान की भावना होनी चाहिए, राष्ट्र कल्याण के हर कार्य को अपना कर्त्तव्य समझ कर करने की भावना होनी चाहिए, तभी उस राष्ट्र का उत्कर्ष चहुँ दिशाओं में फैलता है।

हमारे देश भारतवर्ष को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराने में ऐसे ही त्यागी, बलिदानी, शूरवीरों तथा क्रान्तिकारियों का योगदान है जिन्होंने अपना तन–मन–धन और सर्वस्व इस देश की आजादी के लिए न्यौछावर कर दिया। अपने निजी सुखों को त्यागकर राष्ट्रहित के लिए अपने आपको समर्पित कर दिया। ऐसे शूरवीरों, क्रान्तिवीरों के कारण हमारा देश आजाद हुआ। ऐसे ही क्रान्तिकारियों में अमर शहीद चन्द्रशेखर का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। चन्द्रशेखर आजाद के नाम से अंग्रेज अधिकारी ड़र जाते थे। चन्द्रशेखर आजाद का जन्म वर्तमान मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले के भावना ग्राम में 23 जुलाई 1906 को हुआ था। चन्द्रशेखर आजाद बचपन से ही वीर और साहसी थे। वे हमेशा सच बोलते थे। एक बार वे साधु के वेश में घूम रहे थे तो पुलिस वालों ने उन्हें पकड़ लिया और उनसे पूछताछ की जाने लगी। पुलिस वालों ने उनसे पूछा कि क्या तुम आजाद हो? इस पर चन्द्रशेखर आजाद ने बड़ी चतुराई से सच बोला कि अरे हम आजाद नहीं हैं तो क्या हैं? सभी साधु आजाद होते हैं। हम भी आजाद हैं।

इतना सच बोलने के बाद भी वे पुलिस के चंगुल से निकल गए। उन्होंने जीवन में एक ही सबक पढ़ा था कि गुलामी जिन्दगी की सबसे बड़ी बदकिस्मती है। जब उन्होंने क्रान्तिकारी जीवन में कदम रखा तो इनका साहस भरा कार्य काकोरी षड्यन्त्र था। 9 अगस्त 1925 को सहारनपुर से लखनऊ जाने वाली गाड़ी को काकोरी के पास रोक कर अंग्रेजी खजाना लूटने के पश्चात नौ दो ग्यारह हो गए थे। चाहे कई साथियों को बाद में पुलिस ने पकड़ कर फांसी की सजा दी थी पर आजाद आखिरी समय तक आजाद ही रहे थे। चन्द्रशेखर आजाद देशभक्ति के गीतों को बड़े चाव से सुना करते थे। चन्द्रशेखर आजाद आजीवन अविवाहित रहे। वे कहा करते थे कि अपने सिर पर मौत का कफन बांध कर चलने वाला व्यक्ति कभी शादी के बन्धन में बंधने की कल्पना भी नहीं कर सकता। आजाद ही नहीं उनके दल का हर एक सदस्य अपने घर बार को तिलांजलि देकर दल में शामिल हुआ था। जो व्यक्ति गुलामी की जंजीरों को तोड़ने का स्वप्न लेकर आया हो वह वैवाहिक सुख की कल्पना भी कैसे कर सकता है। एक बार उनके दल के किसी सदस्य ने आजाद से पूछ लिया कि वे कैसी पत्नी की इच्छा करते हैं तो आजाद ने बड़े ही सहज भाव से उत्तर दिया कि मेरे अनुसार मेरे लायक लड़की हिन्दुस्तान में तो क्या, सारी दुनिया में कहीं नहीं मिलेगी क्योंकि मैं ऐसी पत्नी चाहता हूं जो एक कन्धे पर राईफल और दूसरे कन्धे पर कारतूसों से भरा हुआ बोरा उठाकर पहाड़ से पहाड़ घूमती रहे और इस तरह आजादी के लिए अपनी जान दे दे।

27 फरवरी 1931 को वह महान् दिन था जिस दिन आजाद ने अपने जीवन से आजादी पाई थी। वे अक्सर कहा करते थे कि किसी मां ने अभी वो लाल पैदा ही नहीं किया जो आजाद को जीवित पकड़ सके। उन्होंने कसम खाई थी कि वे कभी पुलिस के हाथों जिंदा गिरफ्तार नहीं होंगे। इसी कसम को निभाते हुए वे शहीद हुए थे। प्रयाग के अलफ्रेड पार्क में वे अपने साथी के साथ बैठकर कोई महत्वपूर्ण चर्चा कर रहे थे कि उनके एक साथी ने विश्वासघात करते हुए पुलिस को सूचना दे दी। पुलिस ने चारों ओर से घेर लिया। आजाद ने बड़ी वीरता से सामना किया। दोनों ओर से गोलियों की बौछार होने लगी लेकिन आजाद कब हार मानने वाले थे। उन्होंने अपनी पिस्तौल से निशाना साधकर सी. आई. डी. के सुपरिंटेंडैंट की भुजा पर गोली मारकर उसे नकारा कर दिया। इसी प्रकार एक इंस्पैक्टर का जबड़ा भी उड़ा दिया।

अचानक उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके पिस्तौल में एक ही गोली बची है। वे अजीब संकट में फंस गए। उन्हें अपनी कसम बार–बार याद आने लगी कि जिन्दा रहते हुए पुलिस के आदमी मुझे कभी हाथ नहीं लगाएंगे। उन्होंने अपनी कनपटी पर पिस्तौल की नाल लगाकर घोड़ा दबा दिया और आत्म बलिदान का गौरव प्राप्त किया। उनके शव को देखकर भी पुलिस वालों को यकीन नहीं हो रहा था कि वे मर गए हैं। आजाद से भयभीत पुलिस वाले उनके शव को गोलियां मारते रहे। ऐसे निर्भीक और तेजस्वी थे अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद जिन्होंने मरते दम तक अपनी कसमों को निभाया और जीते जी अंग्रेजों के हाथ नहीं आए।

आज के युवा वर्ग को ऐसे क्रान्तिकारियों के जीवन से शिक्षा लेकर निर्भीक, ओजस्वी और बलवान बनना चाहिए। नशे के कारण जो अपनी जवानी को बर्बाद कर देते हैं वे कभी भी जीवन में उन्नति नहीं कर सकते। अपने यौवन को बर्बाद न करके उसे राष्ट्रहित के कार्य में लगाना चाहिए। चन्द्रशेखर आजाद जैसे कितने ही क्रान्किारियों ने अपनी भरी जवानी के सुखों को छोड़कर इस मार्ग को अपनाया। वे चाहते तो सुख का जीवन व्यतीत कर सकते थे परन्तु उनका लक्ष्य अपने देश को स्वतन्त्र देखना था। इसके लिए उन्होंने त्याग के रास्ते को अपनाया। अपने घर–बार और परिवार को त्याग करके उन्होंने अनेकों कष्ट सहे, कई–कई दिनों तक भूखे रहे परन्तु अपने लक्ष्य से एक क्षण के लिए भी विचलित नहीं हुए। इसलिए आज की युवा पीढ़ी नशे जैसी बुरी आदतों से दूर रहकर अपनी जवानी का, अपनी ऊर्जा का, प्रयोग राष्ट्रहित के कार्यों के लिए करें। आज की युवा पीढ़ी को इन वीर शहीदों को अपना आदर्श और प्रेरणास्रोत मानना चाहिए जिन्होंने इस देश के निर्माण में अपना योगदान दिया है। आज अगर हमारा देश स्वतन्त्र है तो इसके पीछे उन बलिदानियों का बलिदान है। आज की युवा पीढ़ी को नशे से दूर रहकर अपनी शारीरिक और आत्मिक उन्नति करने का प्रयास करना चाहिए। नशे के प्रवाह में बहकर अपनी जवानी को बर्बाद करने के बजाय उसका उपयोग राष्ट्रहित के कार्यों में करना चाहिए।

प्रेम भारद्वाज

संपादक एवं सभा महामन्त्री

पारिवारिक–जीवन में वेदविषयक नीतिशिक्षा की प्रासङ्गिकता

ले.–डा. शालिनी शुक्ला

वेदों में भारतीय प्रज्ञा का परम निदर्शन है। वेदों में बौद्धिक चिंतन की अनवरत धारा स्वत: प्रवाहित होती है। जीवन के समस्त मूल्यों का दिग्दर्शन वेदों के माध्यम से होता है। वेदों की विचारधारा कभी पुरानी नहीं हुई उसका चिंतन पुरातन होते हुए भी जीवन को नित्य नवीन ज्ञान से अभिसिंचित करता है। वेद भारत ही नहीं प्रत्युत समस्त विश्व के पथ–प्रदर्शक रहे हैं। मंत्रों के शब्दार्थ अनुशीलन से यह ज्ञान अधिक सुकर हुआ है। आधुनिक समाज विभिन्न विडम्बनाओं से परिव्याप्त है। एक ओर विकास है तो दूसरी ओर भारतीय संस्कृति का विनाश, उन मूल्यों और मर्यादा का ह्रास वर्तमान समय में परिलक्षित होता है। जिसकी नींव पर हमारा समाज खड़ा है। ऐसे में वेदोक्त नीतिगत शिक्षायें अधिक प्रासंगिक प्रतीत होती हैं।

वेदकालीन नीति–शिक्षा में सत्य का स्थान सर्वोपरि है। अनेक मंत्रों में सत्य की प्राप्ति और असत्य से मुक्ति की कामना की गई है। ऋग्वेद में कहा गया है कि सत्यभाषण मनुष्य की चारों ओर से रक्षा करता है। सत्य के कारण ही पृथ्वी पर लोग तथा दिन–रात आदि फैले हुए हैं। सत्य के कारण ही प्राणी गतिशील हैं। सत्य से ही नदियाँ प्रवाहित होती हैं और सूर्य उदित होता है। ब्राह्मणग्रन्थों में भी सत्य की महत्ता बताई गई है। शतपथब्राह्मण में सत्य को धर्म कहा गया है। संस्कृतभाषा जीवन के विविध पक्षों को दिशा निर्देशित करती आयी है। पारिवारिक जीवन में सत्य से मुक्ति परमावश्यक बतायी गयी है। दम्पति का कर्त्तव्य उत्तम संतति को न केवल जन्म देना है, अपितु उन्हें संस्कारित कर उत्तम समाज के निर्माण में अपना सार्थक योगदान देना है। इसी कारण पत्नी और पति सामाजिक समृद्धि का आधार बताये गये। दम्पति के लिए नित्य और नैमित्तिक कर्म आवश्यक बताये गये हैं। ऐसे पति–पत्नी उत्तम संतति को जन्म देते हैं। अर्थववेद में तेजस्वी, निर्भीक, जितेन्द्रिय संयमी पुत्र की कामना की गई है। दान विषयक नीति की शिक्षा वेदों में दी गई है। परवर्ती साहित्य में भी दान की महिमा का वर्णन प्राप्त होता है। अथर्ववेद में कहा गया है कि हे मनुष्य! तुम शत हाथों वाले होकर धन का संग्रह करो तथा हजारों हाथों वाले होकर उस धन का दान करो। इस प्रकार दान देकर तुम स्वयं और दूसरों को समृद्धि प्रदान करो। वर्तमान समय में मानव–जीवन में पारस्परिक प्रेम का अभाव परिलक्षित होता है।

प्रेम मानव–जीवन को सहयोग एवं पारस्परिक संवेदना प्रदान करने का परम आलम्बन है। यजुर्वेद में कहा गया है कि परिवार में प्रेम, धैर्य, स्थिरता एवं स्वावलम्बन हो। माता पुत्र को पोषण दे तथा पुत्र परिवार को समृद्धि प्रदान करें। अथर्ववेद में कहा गया है कि पति को पत्नी का वस्त्र धारण नहीं करना चाहिए। इससे उसका शरीर अशोभनीय हो जाएगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी एक दूसरे का वस्त्र धारण करने से अनेक संक्रामक रोग हो सकते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि हम कानों से शुभ वचन सुनें, आखों से शुभ वस्तु देखें, हृष्ट–पुष्ट अंगों से देवताओं की स्तुति करते हुये दीर्घायु को प्राप्त करें। पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में आलस्य, दुर्वचन, ज्ञान का अभाव, शास्त्र का ज्ञान न होना, प्रगति में बाधक तत्व होते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है कि हम निद्रा के अधीन न हों, निरर्थक वचन न बोलें, आलस्य न करें, शान्त स्वर में परमात्मा के प्रिय बन उत्तम संतति को प्राप्त करें तथा विद्वानों की सभा में ज्ञानयुक्त शास्त्रों की चर्चा करें। वेदों में भौतिक समृद्धि को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया गया है। संतोष से बड़ा कोई धन नहीं बताया गया है। यजुर्वेद में दूसरों के धन के प्रति आसक्ति न रखने की नीति को महत्व दिया गया है। इसमें कहा गया है कि यह सम्पूर्ण चराचर जगत् ईश्वर से व्याप्त है। परमात्मा के द्वारा दिये गए इस जगत् को त्यागभाव से भोगना चाहिए। किसी के धन के प्रति स्पृहा का निषेध है। वस्तुत: त्याग से महत्तर संसार में कुछ नहीं है। श्रीमद्भगवतगीता में निष्काम भाव से कर्म की महत्ता नि:श्रेयस को प्राप्त कराने वाली बताई गई है।

संसाररूपी सागर को पार करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है। दृढ़ इच्छाशक्ति पारिवारिक जीवन के प्रत्येक कृत्यों में परिलक्षित होती है। वह सत्यभाषण हो, देवोपासन हो, यज्ञानुष्ठान हो, निष्काम कर्म हो, स्वास्थ्य लाभ हो अथवा परस्पर सौमनस्य। पारिवारिक जीवन में सौमनस्य सामाजिक सौहार्द्र का आधार बनता है। जीवन में सत्य का साक्षात्कार विचरण करने पर ही अर्थात् प्रयास करने पर ही मिलता है। अथर्ववेद में सौमनस्य के महत्व की गहन विवेचना की गई है। कहा है कि परमात्मा हमको सहृदय बनाये तथा हम किसी से द्वेष करने वाले न बनें। हम हृदय, मन से एक हों। जिस प्रकार गाय अपने बछड़े से प्रेम करती है, उसी प्रकार हम परस्पर प्रेम–भाव रखें।

ऋग्वेद में उत्तम मार्ग पर चलने की नीति–शिक्षा दी गई है। सन्मार्ग पर गमन मनुष्य को यश और समृद्धि प्रदान करता है। जबकि कुमार्ग गमन अपयश, हानि और विपत्ति का कारण बनता है। अत: ऋग्वेद में सन्मार्ग युक्त समृद्धि की कामना की गई है। वेदों में यज्ञ का अत्यधिक महत्व है। यजुर्वेद में कहा गया है कि जिस प्रकार अग्नि की ज्वाला ऊँची उठती है। उसी प्रकार यज्ञ करने वाला यजमान धन, समृद्धि, संतति को प्राप्त करें। यजुर्वेद में कहा गया है कि जिस घर में पुरोहित हवन करते हैं उस यजमान को आप समृद्ध कीजिए। यज्ञकर्ता का साक्षात्कार वेदों से होता है, उसे स्वत: ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। वह विद्या के क्षेत्र में अग्रगण्य होता है। इसीलिए उसे ब्रह्मणस्पति कहा गया है। मानव–जीवन के लिए आवश्यक है कि वह बाह्याभ्यन्तर से परिशुद्ध हो। यजुर्वेद में कहा गया है कि ईश्वर की कृपा से शारीरिक और मानसिक सभी न्यूनताओं को दूर किया जा सकता है। मनुष्य को शक्ति अन्न के माध्यम से मिलती है। अत: अन्न का अवश्य सेवन करना चाहिए। यजुर्वेद में आत्मिक शक्ति, जीवन में पवित्रता, दीर्घायु, ब्रह्मवर्चस् की कामना की गई है। ईश्वर से यह कामना की गई है कि वह आत्मिक शक्ति के लिए ब्रह्मशक्ति के लिए पवित्र करे। संतान के लिए ब्रह्मवर्चस् की कामना की गई है। ऋग्वेद में उषस् की कृपा से धनादि प्राप्ति, पाप और दु:स्वप्नों से मुक्ति बतायी गयी है। वस्तुत: पाप अनेक दुष्कर्मों का आधार बनता है, उससे मुक्ति से अनेक दुष्कर्मों से मुक्ति मिलती है।

नीतिग्रन्थों में कहा गया है कि परिश्रम से ही धन की प्राप्ति होती है न कि मनोरथ से, सोते हुए सिंह के मुख में स्वयं मृग प्रवेश नहीं करता। इसी कारण परिवार में समय–समय पर अनेक उत्सवों का अयोजन किया जाता था। चार प्रमुख आश्रम, सोलह संस्कार, हमको धर्म के साथ–साथ अनेक नैतिक नियमों की शिक्षा देते हैं। समाज के उत्थान हेतु अपने हित से अधिक परहित चिन्तन आवश्यक है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने परिवार का उत्तम रीति से पालन करे किसी अन्य को किसी प्रकार का कष्ट न प्रदान करे, विशेषकर वह दूसरों को कष्ट न दे। जिसे वह स्वयं के लिए अपेक्षा नहीं करता। ऋग्वेद के एक मंत्र में प्रार्थना की गई है कि हे रुद्र! तुम हमारे ज्येष्ठ अथवा शिशु को मत मारो। युवक और वृद्ध को मत मारो। माता–पिता को मत मारो तथा हमारे शरीर को हानि न पहुँचाओ। एक अन्य मंत्र में पुत्र, पौत्र, गाय, अश्व आदि को भयमुक्त करने की कामना प्राप्त होती है। मनुस्मृति में कहा गया है कि जिस प्रकार मनुष्य प्रेम का इच्छुक होता है उसी प्रकार पशु–पक्षी का पालन भी स्नेहपूर्वक करना चाहिए। यदि मनुष्य किसी कारणवश स्वयं दु:खी है तो उसे दूसरे को दु:ख नहीं पहुँचाना चाहिए।

वेदों में मनोबल श्रेष्ठ माना गया है किन्तु ईर्ष्या आदि दुर्गुणों से मन की सहिष्णुता नष्ट होती है। अथर्ववेद में कहा गया है कि ईर्ष्या के द्वारा मनुष्य का मन किसी अन्य कार्य में नहीं लगता और वह मृत के समान निष्क्रिय हो जाता है। दूसरों को शाप देने अथवा कटुवचन बोलने से हानि स्वयं की ही होती है। कटुवचन बोलने वाले को अग्नि उसी प्रकार नष्ट कर देती है जिस प्रकार आकाश से गिरने वाली बिजली वृक्ष को नष्ट कर देती है। अथर्ववेद में कटुवचन के परित्याग की कामना की गई है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में अनेक त्याज्य कोटि के कर्म बताए गए हैं। इनका परित्याग आवश्यकता है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में कहा गया है कि हे इन्द्र! तुम मोहयुक्त, क्रोध–युक्त वृक के सदृश, द्रोह युक्त स्वान के सदृश, कामयुक्त चक्रवात के सदृश, गर्वयुक्त गरुड़ के सदृश, लोभयुक्त गृध्र के सदृश आचरण करने वाले मनुष्य के शापभूत इन दोषों को नष्ट करो। दुर्गुणों के नाश से ही मनुष्य सभी कष्टों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। सुखी जीवन का आचार सद्गुणों में है न कि दुर्गुणों में। यजुर्वेद में देव–शक्ति से समस्त दुर्गुणों को दूर करने की कामना और कल्याणप्राप्ति की इच्छा प्रकट की गई है। ऋग्वेद और यजुर्वेद की यह प्रेरणा गायत्री मंत्र का आधार बनी।

संक्षेप से लिखा जा सकता है कि सम्पूर्ण वैदिक साहित्य नीतिवचनों से ओत: प्रोत है। यद्यपि वहाँ सभी आश्रमों के प्रति नीतिवचन प्राप्त होते हैं। किन्तु पारिवारिक जीवन के विषय में भी नीतिविषयक चिन्तन स्पष्ट परिलक्षित होता है। वर्तमान समय में पारिवारिक जीवन के महत्व का प्रतिपादन करने वाला मंत्र प्रासङ्गिक है। वैदिक नीतिशिक्षा से अनुप्राणित मानव अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर समाज एवं राष्ट्र का हितसाधक बन सकता है। अथर्ववेद का यह मंत्र वर्तमान समय में भी प्रासङ्गिक है कि–

अनुव्रत: पितु: पुत्रो मात्रा भवतु संमना:।

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवाम्।।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।

सम्यञ्च: सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रय।।

"आज हमारी पाँच माताओं की हो रही है दुर्दशा

ले.-पं. खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

हमारे हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) में पाँच माताओं का विशेष महत्त्व है। वे हैं

(१) जन्म देने वाली (२) गऊ माता, (३) भारत माता। (४) वेद माता (५) गंगा माता। आज इन पाँचों माताओं की दुर्दशा, अवहेलना व अनदेखी हो रही है जिससे देश पतन की ओर अग्रसर है। इसकी दशा सुधारने से ही देश उन्नति व समृद्धिशाली बन सकेगा। इनका संक्षिप्त वर्णन इसी भांति है:-

१. जन्म देने वाली माता-आज के नौजवान बच्चे शादी होने के बाद, जहाँ माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखना चाहिए। इसकी बजाय वे अपने माता-पिता को वृद्ध-आश्रम में भर्ती कर देते हैं और उनकी सेवा, सद्उपदेशों व अनुभवों से वंचित हो जाते हैं। यदि कोई परिवार माता-पिता को घर में रखते भी हैं तो वे उनकी सेवा करना तो दूर रहा है उनकी तरफ कोई ध्यान भी नहीं देते हैं। यह बात सभी परिवारों में तो नहीं है। परन्तु अधिकतर घरों में वृद्ध माता-पिता की अनदेखी की जा रही है इसलिए आज जन्म देने वाली माताओं की स्थिति दयनीय है।

२. गऊ-माता-हमारे हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) में गऊ माता का बहुत बड़ा महत्व है कारण इसके रोम-रोम में परोपकार की भावना व्याप्त है। इसका दूध, घी, दही, छाछ सभी चीजें मनुष्य के लिए अति लाभकारी है। इसकी यह विशेषता है कि इसका मूत्र और गोबर कभी भी दुर्गन्ध नहीं मारता और इसके मूत्र व गोबर से उत्तम खाद बनता है जिसको खेत में डालने से उत्तम अन्न पैदा होता है और पौष्टिक होता जिसके खाने से शरीर स्वस्थ रहता है साथ ही जमीन की उत्पादन शक्ति भी बढती है जब कि रसायन खाद से उत्पादित अन्न इतना अच्छा नहीं होता और इससे जमीन की उत्पादन शक्ति भी धीरे-धीरे कम होती जाती है। इसलिए गऊ के मूत्र तथा गोबर से बनी हुई खाद उत्तम कहलाती है। गाय के मरने के बाद उसकी खाल और हड्डी भी मनुष्य के काम आती है। इसके बच्छड़े भी हल जोतने के काम आते हैं। ऐसी गो माता भी दूध बन्द होने के बाद कसाईयों को काटने के लिए बेच दी जाती है या गली-कूचों में मल खाती हुई घूमती रहती है। आज कल देसी नस्ल की गऊएँ दिन प्रतिदिन कम होते जा रही है और विदेशी नस्ल की गऊएँ बढती जा रही है कारण विदेशी गऊओं के दूध अधिक होता है इसलिए देशी गऊएँ अधिकतर कटने में जाती है जब कि देसी नस्ल की गाय का दूध कम जरूर होता है परन्तु पौष्टिक व लाभदायक अधिक होता है। परन्तु दुख है कि किसान पैसे के लोभ में उसको कसाईयों के हाथ बेच देता है और वे काटी जाती है। इस प्रकार भारत में गऊओं की बड़ी दुर्दशा है। गो-हत्या बन्द होने से ही यह समस्या हल होगी।

३. भारत माता-भारत माता की हालत इस समय बहुत ही खराब हैं। यहाँ पाकिस्तान और बंगला देश से आतंकवादी आते हैं और हर दिन निर्दोष हिन्दुओं की हत्या कर देते हैं। भारत में भ्रष्टाचार, रिश्वत खोरी, तरफदारी, लूट-खसौट बहुत हो रही है। देश में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड बहुत अधिक बढ़ा हुआ है जिससे लोगों का जीवन बहुत ही अधिक दु:खमय बना हुआ है, इसलिए देश में वैदिक ज्ञान की आवश्यकता है। जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड समाप्त हो सकता है, इसके लिए यहाँ गाँव-गाँव में गुरूकुल खोलने की आवश्यकता है, जिनमें बच्चे व बच्चियाँ पढ़कर वैदिक धर्मी बन कर इस अन्धविश्वास के वातावरण को दूर किया जा सकता है। जब तक वैदिक धर्म नहीं फैलेगा तब तक यह मूत्ति-पूजा, श्राद्ध, तर्पण, भूत-प्रेत, कण्ठी-डोरी आदि अन्धविश्वास ऐसे ही चलता रहेगा और देश पतन की ओर बढ़ता रहेगा जिससे देश की दुर्दशा ऐसे ही बनी रहेगी।

४. वेद माता-सृष्टि के आदि से लेकर महाभारत तक पूरे विश्व में वैदिक धर्म ही था। महाभारत के विश्व युद्ध में विश्व के अधिकतर वीर, योद्धा, वैदिक विद्वान्, आचार्य आदि के समाप्त हो जाने से कम पढ़े लिखे स्वार्थी ब्राह्मणों के हाथों में वेद प्रचार का कार्य करना आ गया। उन्होंने अपने स्वार्थ वश वेदों के मन्त्रों का गलत अर्थ लगाकर उसमें यज्ञों में पशुबलि, मूति-पूजा, श्राद्ध-तर्पण आदि करना आरम्भ कर दिया तथा अनेकों मत-मन्तातर चल दिये जिससे केवल भारत से ही नहीं बल्कि विश्व से वैदिक धर्म प्राय: लुप्त हो गया और अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोलबाला हो गया। फिर ईश्वर की अपार कृपा से सन् 1825 में देव दयानन्द का जन्म टंकारा (गुजरात) में हुआ। उन्होंने प्रकाण्ड वैदिक विद्वान् स्वामी विरजानन्द से वेदों का अध्ययन करके देश में पुन: वेदों का प्रचार किया। जितना वेद प्रचार होना चाहिए तथा उतना न होने से अभी तक वेद-माता की दुर्दशा ही है। वेद-प्रचार अधिक होने से यह समस्या हल हो सकती है।

(५). गंगा माता-हिन्दू धर्म में गंगा नदी को बड़ा पवित्र माना गया है। इसकी यह विशेषता है कि इसका जल चाहे कितने ही दिन तक रखो परन्तु उसमें कीड़े नहीं पड़ेंगे। यह कोई चमत्कार नहीं है, इसका कारण। केवल यही है कि यह पहाड़ों में जहाँ जड़ी-बूटियाँ अधिक हैं, वहीं से हो कर आती है जिससे इसके पानी में यह विशेषता हो जाती है। अन्य नदियों में नहीं। हिन्दू धर्म में यह मान्यता बन गई है कि गंगा नदी में स्नान करने से मनुष्य के पाप कट जाते हैं। यह एक गलत धारणा है जिससे हिन्दू जाति में पाप बहुत बढ़ गया है। महर्षि दयानन्द के वेद प्रचार से यह भ्रम प्राय: समाप्त हो गया है। परन्तु इस समय इसकी जो दुर्दशा हो रही है। उसका कारण यह भी है कि जहाँ-जहाँ से यह गुजरती है उसके किनारे के शहरों का गन्दा पानी इसमें गिरता रहता है और गंगा के पवित्र जल को गन्दा बना देता है। कहीं-कहीं तो गंगा का जल इतना गन्दा हो जाता है, उसमें स्नान करने का मन भी नहीं करता। इस प्रकार इस समय गंगा माता की भी दुर्दशा हो रही है।

प्रसन्नता की बात है कि अब नरेन्द्र मोदी का शासन दूसरी बार पूरे बहुमत से आ गया है। अब आशा है कि देश में आतंकवाद पूरी तरह से समाप्त कर दिया जायेगा। देश में भ्रष्टाचार, रिश्वत खोरी, लूट-खसौट सब बन्द कर दी जायेगी। गो-माता की हत्या बन्द कर दी जायेगी, गंगा में गन्दा पानी गिरना बन्द कर दिया जायेगा। देश में वेदों का प्रचार अधिक होना आरम्भ हो जायेगा जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड भी समाप्त हो जायेगा और माता-पिता का प्रत्येक घर में सम्मान होना आरम्भ हो जायेगा जिससे उम्मीद है कि इन पाँचों माताओं का सम्मान होने लगेगा जिससे देश: उन्नति करता हुआ साथ ही समृद्धशाली होता हुआ पुन: "विश्व गुरू" "तथा सोने की चिड़िया" हो जाने की आशा है। इसी भावना के साथ इस लेखकों यही विराम देते हैं।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

विदुरनीतिः नीति भी दर्शन भी

ले.-डॉ. सत्यव्रत वर्मा

(गतांक से आगे)

पण्डित की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह जीवन में प्रशस्य ध्येय को चुनता है, निन्दित कर्म में मन नहीं लगाता। उसका मन आस्था और श्रद्धा से दीप्त होता है। आत्मज्ञान, कर्मशीलता, क्षमा तथा धर्मनिष्ठा आदि उदात्त गुणों का सम्बल पाकर वह गाढ़े समय में भी लक्ष्य के सन्धान में तत्पर रहता है। हर्ष-शोक, शीत-उष्ण, भय-रति आदि द्वन्द्व उसके लिए लक्ष्य-प्राप्ति में बाधक नहीं है। वह जो सोचता है, वह उसके कर्म से ही प्रकट होता है, शब्दों से वह उसे प्रकट नहीं करता। यह पण्डित की व्यावहारिकता का परिचायक है कि वह जो प्राप्त नहीं हो सकता उसकी कामना नहीं करता, जो करता है उसे क्षमता से साधा जा सकता है और वह लोक में पुरुष तो क्या, किसी निर्जीव वस्तु की भी निन्दा नहीं करता। वह निश्चयपूर्ण दृढ़ता के साथ कर्म में लगता है और उसे कभी अधूरा नहीं छोड़ता।

मन को वश में करके समय का पूरा दोहन करता है। इस आत्मसंयम के कारण उसका मन असम्भव अथवा असाध्य कार्यों में नहीं भटकता, नष्ट हुई वस्तु पर शोक नहीं करता और विपत्ति में अडोल रहता है। वह सदा ऐसे कार्य करता है जो समाज और जीवन के लिए मंगलमय हों। पण्डित स्थितप्रज्ञ कोटि का व्यक्ति है। लाभ-हानि, मान-अपमान आदि द्वन्द्व उसे विचलित नहीं करते। सम्मान से उसे हर्ष नहीं होता, अपमान उसे ताप नहीं देता। गंगा के ह्रदय के समान वह सदा शान्त और क्षोभरहित रहता है।

पण्डित केवल शास्त्रज्ञ नहीं, लोक के दैनन्दिन व्यवहारों में भी उसकी गहरी पैठ होती है। उसकी प्रज्ञा लोकोन्मुख होती है। सांसारिक व्यवहार उसे हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष होते हैं। इसीलिए वह प्रत्येक बात पर समाज की स्थिति और जीवन के दृष्टिकोण से विचार कर कार्य करता है-

यस्य संसारिणी प्रज्ञा धर्मार्थावनुवर्तते।
कामादर्थं वृणीते यः स वै पण्डित उच्यते।। 1.2.5.

वह लोकव्यवहार में इतना निपुण होता है कि वह दूसरे के मन को तुरन्त भाँप लेता है और प्रत्येक कार्य के गुण-दोषों पर विचार करने के पश्चात् ही कार्य में प्रवृत्त होता है, आवेग अथवा आवेश से वह कोई काम नहीं करता। पण्डित शास्त्र और प्रज्ञा का चमत्कारी रसायन है। उसका शास्त्रज्ञान बुद्धि के समान प्रखर होता है और प्रज्ञा शास्त्र के अनुरूप उर्वर। वह आर्य-मर्यादाओं का रक्षक तथा अनुगामी होता है (1.20-35)। विनय पण्डित का आभूषण है। जो प्रभूत धन, विद्या तथा प्रभुता पाकर भी फलदार पेड़ की भाँति विनम्र/नत रहता है, वही पण्डित कहलाने का अधिकारी है।

2. मूढ-

पण्डित का दूसरा ध्रुव 'मूढ' है। विदुरनीति में मूढ के जिस स्वरूप का बखान है, वह कहीं-न-कहीं धृतराष्ट्र की विकृत सोच को लक्षित करता है और उसे उस विनाशकारी मार्ग से विरत करने के प्रयास से प्रेरित है। 'मूढ शत्रु से मित्रता करता है और मित्र से न केवल द्वेष रखता है बल्कि उसे हानि पहुँचाने को सदा तत्पर रहता है। वह उनसे प्रेम करता है जो उसे नहीं चाहते, जो उसे चाहते हैं उनसे मुँह मोड़ लेता है और अपने से अधिक शक्तिशाली के साथ बैर बांधता है''; मूढ का यह स्वरूप प्रकारान्तर से धृतराष्ट्र के पाण्डवों के प्रति आचरण पर करारी चोट है। व्यवहार के धरातल पर जो निपट निरक्षर होकर भी घमण्ड से चूर रहता है, दरिद्र होकर महत्त्वाकांक्षाएँ पालता है और हाथ-पैर हिलाए बिना ही संसार का समूचा धन हथियाने को लालायित रहता है, वह मूढ है-

अश्रुतश्च समुन्नद्धो दरिद्रश्च महामनाः।
अर्थांश्चाकर्मणा प्रेप्सुर्मूढ इत्युच्यते बुधैः।। 1.35.

अपना काम छोड़ कर दूसरे के काम में जो हाथ डालता है और मित्र के साथ भी कपट करता है, विज्ञजन उसे मूढ कहते हैं। जो अपने कार्यों को व्यर्थ फैलाता है, सब पर सन्देह करता है और शीघ्र करने वाले काम में देर लगाता है, वह मूढ़ कहलाता है। वह निरा मूढ़ है जो बिना बुलाए दूसरों के घर में घुस जाता है, सदा बक-बक करता है और अविश्वसनीय व्यक्ति पर विश्वास करता है। उसे भी विदुरनीति में मूढ कहा गया है जो अहंकार के कारण पितरों का श्राद्ध नहीं करता, देवताओं की पूजा से विमुख रहता है और जिसके साथ कोई मित्रता नहीं करता। जो स्वयं दोषों से कलंकित होता हुआ भी दूसरों पर मिथ्या दोषारोपण करता है, असमर्थ होता हुआ भी व्यर्थ क्रोध करता है और निठल्ला रह कर भी ऐसे दुर्लभ पदार्थों की कामना करता है जो उसकी पहुँच से परे हों, वह निपट मूढ है।

3. इन्द्रिय-संयम-

विदुरनीति में जिन नैतिक गुणों को विशेष महत्त्व मिलता है, उनमें दम अथवा इन्द्रिय-संयम प्रमुख है। इन्द्रियों को वश में रखना सर्वविध अभ्युदय का सोपान है। यदि एक भी इन्द्रिय काबू से बाहर हो जाए तो जिस मार्ग से वह विषय की ओर बढ़ती है, उसी मार्ग से मनुष्य की प्रज्ञा बाहर निकल जाती जैसे मात्र एक छेद से मशक/घट का सारा पानी बह जाता है: **ततोऽस्य स्रवति प्रज्ञा दृतेः पात्रादिवोदकम् (1.82)**। इन्द्रियों को वश में करना यद्यपि मृत्यु को वश में करने से भी अधिक कठिन है किन्तु उन्हें खुला छोड़ देने से मनुष्य तो क्या, देवता भी बरबाद हो जाते हैं-

इन्द्रियाणामनुत्सर्गो मृत्युनापि विशिष्यते।
अत्यर्थं पुनरुत्सर्गः साधयेद् दैवतान्यपि।। 7.51

दम अथवा इन्द्रिय-निग्रह अनुशासित जीवन की आधारशिला है। उसके बिना जीवन में उत्थान अथवा गौरव की कल्पना करना दिवास्वप्न के समान है (1.104)। विषयों में बेरोक विचरती हुई इन्द्रियाँ संसार को ऐसे मथ देती हैं, जैसे राहु सूर्य को ग्रस लेता है। जो इन्द्रियों के आवेग में बह जाता है, उस की विपत्तियाँ उत्तरोत्तर बढ़ती जाती हैं (2/55)। इन्द्रियाँ शरीर रूपी रथ के घोड़े हैं। इन्हें यत्नपूर्वक साधने से ही जीवन यात्रा सुखद तथा निर्विघ्न होती है। काबू से बाहर हुई इन्द्रियाँ मनुष्य को बरबाद कर देती हैं जैसे बेकाबू घोड़े अनाड़ी सारथि को पथ पर पटक देते हैं-

एतान्यनिगृहीतानि व्यापादयितुमप्यलम्।
अविधेया इवादान्ता हयाः पथि कुसारथिम्।। 2.60

इन्द्रियों पर नियन्त्रण न होने के कारण मूर्ख व्यक्ति अनर्थ को अर्थ और अर्थ को अनर्थ मानता हुआ नाना कष्ट भोगता है। जो धर्म और अर्थ के अनुशासन को भूल कर इन्द्रियों के चंगुल में फंस जाता है, धन, दारा और जीवन भी उसका साथ छोड़ देते हैं। ऐश्वर्य का स्वामी होकर भी जो इन्द्रियों का दास है, ऐश्वर्य अधिक समय तक उसके पास नहीं टिकता-**ऐश्वर्याद् भ्रश्यते हि सः (2.63)**। राजा के लिये तो इन्द्रियों को जीतना शत्रुओं को जीतने से भी अधिक आवश्यक है।

4. क्षमा/सहनशीलता-

लोक-व्यवहार में क्षमा-सहनशीलता से श्रेष्ठ उपाय दूसरा नहीं है। समर्थ व्यक्ति के लिए यह अभ्युदय और समृद्धि का अचूक मन्त्र है-**नातः श्रीमत्तरं किञ्चिदन्यत् पथ्यतमं मतम् (7.58)**। क्षमा मनुष्य का सर्वोत्तम बल है। क्षमाशील व्यक्ति को भले ही कोई मोह अथवा अहंकार के कारण दुर्बल या कायर मान ले, किन्तु उस जैसा बलवान् और कोई नहीं है। क्षमा शक्तिहीन का गुण है और शक्तिशाली का भूषण। क्षमा वस्तुतः अनूठा वशीकरण मन्त्र है जो क्षण भर में सबको अपने वश में कर लेता है। जिसके हाथ में शान्ति (सहनशीलता) की अदृश्य तलवार हो, दुर्जन भी उसका बाल बांका नहीं कर सकता-**शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः (1.55)**। इसके विपरीत असहनशील को दुनिया भर के दोष घेर लेते हैं। राख पर रखी हुई आग तो आगे-पीछे बुझ जाती है पर असहिष्णु के दोष उत्तरोत्तर प्रचण्ड होते जाते हैं। जैसे अहिंसा सुख का स्रोत है, धर्म मंगलकारी है वैसे ही क्षमा (सहनशीलता) शान्ति की गंगोत्री है-**क्षमैका शान्तिरुत्तमा (1.57)**। मनुष्य के लिए जो छह गुण अपरिहार्य हैं, उनमें क्षमा को साग्रह स्थान देकर नीतिकार ने प्रकारान्तर से उसके अतिशय महत्त्व को रेखांकित किया है। व्यवहार की बात यह है कि निर्बल व्यक्ति को सब कुछ सहन करना चाहिए, शक्तिशाली धर्म/न्याय के पोषण के लिए सब कुछ सहन करे, जिसके लिये समृद्धि और कंगाली बराबर हैं, उनके लिये सहनशीलता (क्षमा) वरदान से कम नहीं है-

क्षमेदशक्तः सर्वस्य शक्तिमान् धर्मकारणात्।
अर्थानर्थौ समौ यस्य तस्य नित्यं क्षमा हिता।। 7.59

(क्रमशः)

पृष्ठ 2 का शेष-वेदों में ब्रह्म का...

सर्ववक्ता (विश्वतोबाहुः) सर्वत्र बाहु अर्थात् सर्व धारक (उत्) और अन्य श्रोत्रादि भी हैं। (विश्वतस्यात्) सर्वगत (बाहुभ्याम्) अत्यन्त बल और पराक्रम इन दोनों बाहुओं में (सम धमति) यथायोग्य जन्म मरण आदि प्राप्त करा रहा है। (सम पतत्रैः) सम्यक् प्राप्त होने वाले सुख-दुःख दोनों से प्राप्त सब जीवों को (द्यावा पृथिवी) पृथ्वी से लेकर द्युलोक तक (जनयन्) जगत् का कर्ता है (देवः) विश्वकर्मा परमात्मा (एकः) अकेला ही अद्वितीय है।

इस मंत्र में ब्रह्म को सर्वव्यापक और सृष्टिकर्ता के रूप में निरूपित किया गया है। ब्रह्म सर्वाधार है अथर्ववेद काण्ड 10 सूक्त 7 के मंत्रों में इसीलिए उसे स्कम्भ नाम से सम्बोधित किया गया है।

स्कम्भो दाधार द्यावा पृथिवी उभे इमे स्कम्भो दाधारोर्वन्तरिक्षं। स्कम्भो दाधार प्रदिशः षडुर्वीः स्कम्भ इदं विश्वं भुवनमा-विवेश।। अथर्व. 10.7.35.

भावार्थ-सूर्य, पृथ्वी आदि जगत् को परमेश्वर रचकर धारण करता है और वह यह संसार उसके बीच व्याप्त हैं। यजुर्वेद 23 में भी कहा गया है स दाधार पृथिवी द्यामुतेमां यजुर्वेद 23.11 में भी उसे सर्वव्यापक बताया गया है। मंत्र कहता है-

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशोदिशश्र्च। उपस्थाय प्रथमजा मृतस्या-त्मनात्मानमभि सं विवेश।।

(परीत्य) व्याप्त होकर (भूतानि) सब भूत आकाश और प्रकृति से लेकर पृथ्वी पर्यन्त सब संसार में (परीत्य) व्यापक होकर (लोकान्) सब लोकों में (परीत्य) एक कण भी उसके बिना रिक्त नहीं (सर्वाः) सब (प्रदिशः) इशान्यादि उपदिशा (दिशः) सब पूर्वादि दिशा (च) और (उपस्थाय) यथावत् बना कर उपस्थित (प्रथमजाम्) मुख्य प्राणी (ऋतस्य) परमानन्द स्वरूप परमात्मा को (आत्मना) अपने आत्मा से (आत्मानाम्) परमानन्द स्वरूप परमात्मा में (अभि संनिवेश) प्रवेश करके सब दुःखों से छूट कर उसी परमात्मा में रहता है।

परब्रह्म परमात्मा सर्वव्यापक के साथ ही सर्वज्ञ भी है। कोई भी प्राणी उससे छिपकर कुछ भी नहीं कर सकता है। इसी भावना को निम्न मंत्र व्यक्त कर रहे हैं।

आ पश्यति प्रति पश्यति परा पश्यति पश्यति। दिवमन्तरिक्षमाद् भूमिं सर्वं तद् देवि पश्यति।। अथर्व. 4.20.1.

अर्थात् परमात्मा सर्व दृक है। सृष्टि में उससे छिपा हुआ कुछ भी नहीं है। इसी भावना को अथर्ववेद काण्ड 16 सूक्त 16 मंत्र 2 व 4 में व्यक्त किया है-

य तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्। द्वौ संनिषद्यन्मन्त्रयेते राजातद् वेद वरूणस्तृतीय।।

अथर्व. 4.16.2.

(यः) जो पुरूष (तिष्ठति) खड़ा होता है अथवा (चरति) चलता है (च) और (यः) जो पुरूष (वञ्चति) ठगी करता है और (यः) जो (निलायम्) भीतर घुसकर और (यः) जो (प्रत्तङ्कम) बाहर निकल कर (चरति) काम करता है और (द्वौ) दो व्यक्ति (संनिषद्य) एक साथ बैठकर (यत्) जो कुछ (मन्त्रयेते) कानाफूसी करते हैं (तृतीय) तीसरा (राजा) राजा (वरूण) वरणीय परमात्मा (तत्) उसे (वेद) जानता है।

चौथे मंत्र में भी इसी का विस्तार है। अतः उसे छोड़ देते हैं। ब्रह्म सर्वशक्तिमान, सर्वेश्वर एवं सर्व नियन्ता है। इस पर कहा है-**न द्याव इन्द्रमोजसानान्तरिक्षाणि वज्रिणम्। न दिव्यसचन्त भूमयः।।**

ऋ. 8.6.15.

उस वज्र शक्ति वाले परमात्मा को पराक्रम से न द्युलोक, न अन्तरिक्ष लोक, न भूलोक अतिक्रमण कर सकते हैं।

न यस्यं ते शवसान सख्य मानंश मर्त्यः। न किंः शवांसि ते नशत्।। ऋ. 8.68.8.

भावार्थ-वह ब्रह्म अत्यन्त शक्ति सम्पन्न है उसी की शक्ति की मात्रा से यह समस्त जगत् शक्तिमान हो रहा है उसको कौन पा सकता है।

अवसिन्धु वरूणो द्यौरिव स्थाद द्रप्सो नश्वेतो मृगस्तु-विष्मान्। गम्भीर शंसो रजसो विमानः सुपार क्षत्रः सतो अस्य राजाः।।

ऋ. 7.87.6.

भावार्थ-वह पूर्ण परमात्मा जिसने समुद्रादि अगाध जलाशयों की मर्यादा बांध दी है वह रेणु आदि सूक्ष्म पदार्थों का निर्माता व अनन्त शक्ति सम्पन्न और वही इस सद्रूप जगत् का राजा है। **(क्रमशः)**

शोक समाचार

आर्य समाज सैक्टर-22 चण्डीगढ़ के पूर्व उपप्रधान एवं वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री देसराज थापर जी की धर्मपत्नी श्रीमती नसीब कुमारी जी का गत दिनों देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। स्व. श्रीमती नसीब कुमारी जी धार्मिक विचारों की महिला थी। आर्य समाज में यज्ञ, सत्संग आदि कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेती थी। उनकी आत्मिक शान्ति के निमित्त श्रद्धांजलि सभा का आयोजन दिनांक 30 जून 2019 को आर्य समाज सैक्टर-22 चण्ड़ीगढ में किया गया। श्री कर्नल धर्मवीर तथा श्री सोमदत्त शास्त्री जी ने स्व. श्रीमती नसीब कुमारी के श्रेष्ठ जीवन और उत्तम कर्मों को स्मरण करते हुए आत्मा-परमात्मा तथा जीवन-मृत्यु पर विचार देते हुए श्रद्धांजलि प्रदान की। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देकर शान्ति व सद्गति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की धैर्य शक्ति प्रदान करें।

देसराज थापर

आर्य समाज बंगा का चुनाव

आर्य समाज मंदिर बंगा का चुनाव दिनांक 14 जुलाई 2019 को प्रातः सत्संग के पश्चात आर्य समाज के प्रांगण में श्री शादी लाल जी महेन्दु की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें श्री विनोद शर्मा जी के नाम का प्रस्ताव श्री देवेन्द्र सूदन ने रखा जिसका अनुमोदन श्री नरेन्द्र गोगना एवं श्री राम भरोसे जी ने संयुक्त रूप से किया। अन्य कोई नाम पेश न होने की वजह से श्री विनोद शर्मा जी को आगामी एक वर्ष के लिये सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया। बाकी कमेटी के गठन करने का अधिकार भी श्री विनोद शर्मा जी को दिया गया जिसमें उन्होंने निम्न प्रकार से कमेटी गठित की। संरक्षक श्री शादी लाल महेन्द्रु, प्रधान श्री विनोद शर्मा, उप प्रधान श्री नरेन्द्र गोगना, मंत्री श्री श्याम लाल आर्य, उप मंत्री श्री रामभरोसे, कोषाध्यक्ष श्री देवेन्द्र सूदन जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री राकेश सूरी, लेखा निरीक्षक श्री विजय स्याल। अन्तरंग सदस्य श्री प्रदीप चावला, श्री राकेश बत्तरा, श्री मनजीत अरोडा, डा. राजेश शर्मा, श्री सतपाल सूरी, श्री विनीत बेदी, श्री सुनील मल्होत्रा, श्री चन्द्रमोहन सूरी, श्री अशोक शर्मा, श्री अशोक महेन्द्रु, श्रीमती प्रवीण गांधी। **-श्याम लाल आर्य मंत्री**

आर्य समाज मोगा की कार्यकारिणी का गठन

आर्य समाज मोगा का विगत दिनों सर्वसम्मति से चुनाव हुआ था जिसमें श्री नरेन्द्र सूद को आर्य समाज मोगा का प्रधान चुना गया था और कार्यकारिणी के गठन का अधिकार दिया गया था। अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए आर्य समाज के प्रधान श्री नरेन्द्र सूद ने कार्यकारिणी का गठन किया जो इस प्रकार है- वरिष्ठ उपप्रधान श्री सुरेश मल्होत्रा, उपप्रधान-डा. देव प्रकाश चुघ, श्री अनिल गोयल, श्री प्रेमनाथ मित्तल, श्रीमती गीता आर्य, मन्त्री श्री अमित बेरी, कोषाध्यक्ष श्री जोगिन्द्र सिंगला, संयुक्त सचिव श्री जतिन्द्र गोयल, पुस्तकालयाध्यक्ष श्री कंवर सिंह सैन, अध्यक्ष आर्य वीर दल- श्री इन्द्र सूद, सभा प्रतिनिधि श्री सत्य प्रकाश उप्पल, प्रतिष्ठित सदस्य-श्री प्रियतम देव सूद, स्वर्ण शर्मा, श्रीमती निर्मला शर्मा, श्री रमेश वधवा, श्री जगदीश चन्द्र मेहता, श्री बोधराज मजीठिया।

-नरेन्द्र सूद प्रधान आर्य समाज मोगा

आर्य समाज मोगा में शिक्षक कार्यशाला का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में आर्यसमाज मोगा में दिनांक 14 जुलाई 2019 को एक दिवसीय शिक्षक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वहां पहुंचने पर सामूहिक चित्र खिंचवाते हुये आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, श्री प्रिंसीपल विनोद शर्मा जी दयानन्द माडल स्कूल जालन्धर, वैदिक प्रवक्ता श्री राजू वैज्ञानिक जी, श्री प्रियतम देव जी, श्री विजय कुमार, आर्य समाज मोगा के प्रधान श्री नरेन्द्र सूद जी, श्री सत्यप्रकाश उप्पल जी, प्रिंसीपल श्रीमती समीक्षा शर्मा जी एवं अन्य। चित्र दो में श्री सत्यप्रकाश उप्पल जी, प्रिंसीपल विनोद शर्मा जी, श्री राजू वैज्ञानिक जी, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, श्री विनोद भारद्वाज जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग, श्री प्रियतम देव जी। नीचे चित्र एक में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री विनोद भारद्वाज जी को सम्मानित करते हुये श्री सत्यप्रकाश जी उप्पल, प्रिंसीपल श्रीमती समीक्षा शर्मा जी, श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार एवं मोगा स्थित आर्य शिक्षण संस्थाओं के प्रधानाचार्य एवं चित्र चार में उपस्थित जनसमूह।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) की शिक्षा इकाई आर्य विद्या परिषद पंजाब द्वारा दिनांक 14 जुलाई 2019 रविवार को प्रात: 9.00 बजे से दोपहर बाद 2.00 बजे तक शिक्षक अभिविन्यास पर एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मोगा की समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं ने भाग लिया। सर्वप्रथम सभा से पधारे मान्य अधिकारी गणों का स्वागत किया गया जिसमें सर्वश्री अशोक परूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब, श्री विनोद भारद्वाज जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग, श्री विनोद कुमार जी प्रिंसीपल दयानन्द माडल स्कूल जालन्धर उपस्थित हुये। इसके अतिरिक्त आर्य जगत के प्रख्यात वैदिक विद्वान श्री आचार्य राजू वैज्ञानिक जी विशेष रूप से इस समारोह में उपस्थित हुये। इन सभी महानुभावों को पुष्प हार, पीतवस्त्र एवं दोशाले प्रदान कर सम्मानित किया गया। सर्वप्रथम दिवाकर भारती आर्य पुरोहित आर्य समाज मोगा ने गायत्री महामंत्र एवं ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों का पाठ कर सभी के कल्याण की कामना की एवं मंच संचालन किया। वक्ताओं ने विशेष रूप से छात्रों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्यापन की शैली एवं मनोवैज्ञानिक रूप से प्रेरित करने के लिये सुझाव एवं सूत्र दिये। आर्य माडल सी.सै.स्कूल मोगा के विद्यार्थियों ने मान्य अतिथियों का स्वागत गीत गाकर अभिनन्दन एवं स्वागत किया। अनन्तर छात्रों ने भक्ति गीत गाकर ईश्वर के प्रति आस्था एवं कृतज्ञता व्यक्त की।

इसके पश्चात आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट ने सभागत शिक्षकों को पढ़ाने की कला, बच्चों के साथ सामंजस्य स्थापना एवं सदभावना से पढ़ाने के लिये प्रेरित किया। श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी ने छात्रों को आत्मीयता के साथ जोड़ने के लिये प्रेरित किया। पश्चात श्री विनोद भारद्वाज जी ने प्रतियोगिता के इस युग में छात्रों को प्रतिस्पर्धा के साथ तैयार रहने के लिये शिक्षकों का ध्यान आकर्षित किया। इस समस्त कार्यक्रम को शिक्षण संस्थाओं के प्रधान एवं प्रबन्धकों श्री सत्यप्रकाश उप्पल, श्री नरेन्द्र सूद जी, श्री बोधराज मजीठिया, श्री कृष्ण गोपाल जी ने सफल बनाने में अपने शिक्षकों को प्रेरित किया। श्री बोधराज मजीठिया ने अपने सम्बोधन में कहा कि बच्चों को इस प्रकार से नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा दी जाए कि वैज्ञानिक जी जैसे विद्वान तैयार हो सकें। श्रीमती गीता आर्या जी ने बच्चों की लिखाई पढ़ाई के साथ साथ आध्यात्मिक चेतना से भी जोड़ने की बात कही। प्रथम भाग समाप्ति पर सभी को 30 मिनट का समय जलपान के लिये दिया गया।

इसके पश्चात वैदिक प्रवक्ता श्री राजू वैज्ञानिक जी ने सभा में उपस्थित जनों को शिक्षा, धर्म, व्यवहार, तप, दीक्षा एवं मानव धर्म को अपना कर जीवन सफल बनाने की बात कही। प्रो. परमजीत सिंह जी ने अपने शैक्षणिक काल के अनुभव सांझा कर शिक्षकों को प्रेरित किया। दयानन्द माडल स्कूल जालन्धर के प्रिंसीपल श्री विनोद कुमार जी ने शिक्षा की आधुनिक पद्धति को बताते हुये प्रोजैक्टर के द्वारा सभी शिक्षकों को प्रेरित किया जोकि बहुत ही सारगर्भित था। श्रीमती समीक्षा शर्मा प्रिंसीपल आर्य माडल सी.सै.स्कूल मोगा ने मान्य अतिथियों का स्वागत अभिनन्दन किया एवं आभार व्यक्त किया। अंत में श्री सत्यप्रकाश जी उप्पल ने सम्बोधित करते हुये कहा कि एक योग्य गुरु ही योग्य शिष्य तैयार कर सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। जिनको प्रज्ञाचक्षु दंडी स्वामी विरजानन्द जी ने तैयार किया। इस अवसर पर श्रीमती अनीता सिंगला, प्रिंसीपल आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल, श्री देवेन्द्र गोयल, प्रिंसीपल एम.डी.ए.एस. सी.सै.स्कूल, श्रीमती राजवन्त भुल्लर प्रिंसीपल एम.डी.ए.एस. माडल स्कूल, श्रीमती रीतू गडकर प्रिंसीपल डी.एन. माडल सी.सै.स्कूल, श्री एस.के. शर्मा प्रिंसीपल डी.एम. कालेज मोगा, श्रीमती वरिन्द्र सोढी प्रिंसीपल डी.एम.कालेजिस्ट स्कूल एवं श्री एम.एल. जैदका जी प्रिंसीपल डी.एम. कालेज आफ एजुकेशन उपस्थित रहे। शिक्षक कार्यशाला में श्री प्रियतमदेव जी, प्रवीण सिंगला जी, अमित बेरी, जगदीश अग्रवाल, डा. चुघ, हेमन्त सूद एवं आशीष अग्रवाल भी आमंत्रित थे। यह सारा कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से प्रेरित रहा। एतदर्थ समस्त घटकों की ओर से उन्हें अनन्त साधुवाद। श्री सत्यप्रकाश जी उप्पल ने सभागतजनों के प्रति आभार एवं धन्यवाद व्यक्त किये। इस सारे कार्यक्रम में श्री नरेन्द्र सूद प्रबन्धक आर्य माडल सी.सै.स्कूल का विशेष योगदान रहा। एतदर्थ वह साधुवाद के पात्र हैं। शान्ति पाठ के पश्चात सभी ने ऋषि लंगर में प्रीतिपूर्वक भोजन ग्रहण किया।

–दिवाकर भारती पुरोहित
आर्य समाज मोगा

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक–प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**